प्रश्न–जनजातीय समाज एवं संस्कृति पर वैश्वीकरण के अंतर्विरोधी प्रभावों को समझाइए।

(250 शब्द)

Elucidate the contradictory effects of globalisation on tribal society and culture.

(250 Words)

मॉडल उत्तर

भूमिका–भारत में जनजातीय समुदाय भारतीय समाज का वह पिछड़ा समुदाय है, जो सामान्यत: जंगलों एवं पहाड़ों में निवास करता है। जिनका एक विशेष नाम होता है, एक विशिष्ट संस्कृति होती है, जो अंतर्विवाहित होते हैं तथा आर्थिक रूप से मुख्यत: जंगलों पर निर्भर होते हैं।

वैश्वीकरण ने भारतीय जनजातीय समाज को कई रूपों में प्रभावित किया है। इसका जनजातीय समाज पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही रूपों में प्रभाव पड़ा है।

सकारात्मक प्रभाव:-

- वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप जनजातीय क्षेत्रों में नवीन उद्योग-धन्धों का विकास हुआ, कई नवीन परियोजनाएं प्रारंभ हुई और रोजगार के क्षेत्र में नए अवसरों का सृजन हुआ।
- उदारवाद के कारण रूढ़िवादिता, संकीर्णता आदि में कमी आई है, जिससे जातिगत पूर्वाग्रह आदि कम हुए हैं। जिसका प्रत्यक्ष लाभ दलितों की सामाजिक स्थिति पर पड़ा है।
- इसके प्रभावस्वरूप जनजातीय क्षेत्रों में भी संचार क्रान्ति का प्रसार हुआ एवं उपभोक्तावादी संस्कृति का विकास हुआ, जिससे जनजातियों की महत्वाकांक्षा में वृद्धि हुई।
- वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप पहचान के संकट में वृद्धि हुई है, जिसके समाधान के क्रम में नृजातीय पहचान के तत्वों के महत्व में वृद्धि हुई और नृजातीय तत्वों के आधार पर जनजातियों में संगठनों का विकास हुआ तथा जनजातीय आंदोलनों में वृद्धि हुई।
- जनजातियाँ मुख्य रूप से सेवा प्रदाता जातियाँ रही हैं, जिनका जाति व्यवस्था में शोषण होता रहा है। भूमण्डलीकरण के कारण इसकी सेवा तथा वस्तुओं को वृहद् बाजार मिला है। जिससे इनकी आय में वृद्धि हुई है और जीवन स्तर पर सुधार हुआ है।
- इसके प्रभावस्वरूप आधुनिक शिक्षा एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का जनजातियों में भी प्रसार हुआ। फलत: इनके अन्धविश्वासों एवं कुरीतियों में कमी आयी है।

नकारात्मक प्रभाव:-

- वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप लोककल्याणकारी राज्य कमजोर हुआ है और निजीकरण में वृद्धि हुई है। इससे जनजातीय हितों की उपेक्षा हुई है।
- सामाजिक, आर्थिक व शैक्षणिक असमानता में वृद्धि हुई है एवं जनजातीय समूहों का सीमांतीकरण हुआ है। फलत: उनकी नगर की ओर प्रवास में वृद्धि हुई है, विभिन्न आंदोलनों का उद्भव हुआ है एवं इनका नक्सलीकरण हुआ है।
- जनजातीय क्षेत्रों में बढ़ते औद्योगीकरण के कारण प्राकृतिक संसाधनों के दोहन की गति तीव्र हुई है। इससे जनजातियों को विस्थापित होना पड़ा है।
- जनजातीय क्षेत्रों में योग्यता एवं धन के महत्व में वृद्धि हुई तथा इससे इन समाजों में वर्ग-स्तरीकरण का विकास हुआ एवं असमानता में वृद्धि हुई।
- इसने पहचान के संकट को उत्पन्न कर नृजातीय तत्वों के महत्व में वृद्धि की है। फलत: विभिन्न नृजातीय आंदोलनों के उद्भव से क्षेत्रवादी व अलगाववादी भावनाओं का प्रसार हुआ।

अंत में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।